दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ

"तराई शोध व विकास केन्द्र " (C-TREAD)

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय

रूद्रपुर उधमसिंह नगर

"तराई शोध व विकास केन्द्र " **(C-TREAD)** एवं भूगोल विभाग द्वारा

"जल–धन संकट" विषय पर एक सतत व्याख्यान माला

प्रथम व्याख्यान दिनांक– 06.01.2022 समय 12:00 बजे

विषय शीर्षकः– सूखी नदी क्षेत्र के बाढ़ सम्भावित क्षेत्रों का अध्ययन एवं प्रबन्धन

वक्ताः– सूरज कुमार (शोध छात्र) भूगोल

नदी भूतल पर प्रवाहित एक जलधारा है जिसका उद्गम स्त्रोत प्रायः कोई झील/हिमनद, (ग्लेशियर) झरना या वर्षा का पानी होता है अन्ततः किसी सागर या झील में गिरती है नदी दो प्रकार की होती है सदानीरा या बरसाती, विश्व की सर्वाधिक प्राचीन सभ्याताओं का जन्म गंगा व सिन्धु नदियों की घाटियों में ही हुआ एवं दुनिया के अधिकाश नगर नदियों के किनारे ही विकसित हुए हैं। भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार ही नदियॉ रही है किन्तु वर्तमान समय में दुनिया भर की अनेकों नदियों की तरह ही तराई की नदियॉ भी प्रदूषण का शिकार हैं तराई में आबादी के जमाव से पूर्व यहां की नदियों का जल इतना पवित्र था किन्तु, वर्तमान समय में नगरीकरण व औद्योगिकरण ने नदियों के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है नदी में शहरों का प्रदूषित जल, कारखानों के रासायनिक अवशेष जल एवं सीवेज के जरिए गिरते पानी से नदियॉ संक्रमित हो चुकी है आज तराई की अधिकाशं नदियां बिमार सी है इसके अलावा जलवायु परिवर्तन भी एक महत्वपूर्ण कारक है जिसके फलस्वरूप अनियमित व अनियन्त्रित वर्षा के कारण बाढ का संकट तराई क्षेत्र झेलने को मजबूर है। आज नदियों की दुर्दशा कल सभ्यता के अस्तित्व के लिए खतरा व चेतावनी है। अतः समय रहते नदियों की पवित्रता व अस्तित्व को बचाने की मुहिम में सभी को साथ लेकर चलना होगा क्योंकि–

"नदियॉ हैं तो, यह मानव जीवन है
नदियॉ हैं तो, यह धरा है
नदियॉ हें तो, हरियाली है
नदियॉ है, तो, जीवन में सुख–समृद्धि और खुशहाली है।"

प्रो0 के0के0 पाण्डे प्राचार्य अध्यक्ष /मुख्य समन्वयक (C-TRED)	डा0 कमल बोरा आयोजक सचिव/ समन्वयक भूगोल विभाग	प्रो0 पूनम रौतेला सह समन्वयक भूगोल विभाग	डा0 पूनम साह सह समन्वयक भूगोल विभाग

06-01-2022

व्यान माला की रूपरेख प्रस्तुत करते हुए संयोजिका डॉ0 कमला

06-01-2022

व्यान माला की रूपरेख प्रस्तुत करते हुए संयोजिका डॉ0 कमला ब

विभाग प्रभारी प्रो0 पूनम रौतेला को बैच अलंकरण

डॉ0 पूनम साह को छात्रा फारिहा द्वारा बैच अलंकरण

पुष्प गुच्छ से प्राचार्य का स्वागत करते हुऐ भूगोल विभाग की प्रो0 पूनम रौतेला, डॉ

पूनम साह एवं डॉ0 कमला बोरा

श्रृंखला के मुख्य वक्ता श्री सूरज कुमार द्वारा सूखी नदी पर व्याख्यान

हिन्दी सान्ध्य दैनिक 'ऊधमसिंह नगर का दर्पण'

महाविद्यालय में जलधन संकट विषय पर हुए व्याख्या

रुद्रपुर (दर्पण सम्वाददाता)। सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के भूगोल विभाग व तराई शोध शिक्षा व विकास केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में जल धन संकटश विषय पर व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य मुख्य समन्वयक सी-ट्रेड प्रो. कमल किशोर पांडेय के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम का आयोजन व्याख्यान माला की संयोजिका असिस्टेंट प्रोफेसर डा. कमला बोरा ने किया। प्राचार्य प्रो.पांडेय को प्रो. पूनम रौतेला द्वारा श्भक्तदर्शन पुरस्कारश में नामित होने पर बुके देकर व बैच लगाकर सम्मानित किया गया। प्राचार्य ने अपने सम्बोधन में तराई क्षेत्र के विकास के लिए कृषि, मृदा, जल संरक्षण, पर्यावरण, जैव विविधता व मानव संसाधन आदि विषयों पर कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया। विभाग प्रभारी प्रो. रौतेला द्वारा

ग्लेशियरों पर ब्लेक कार्बन के प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए कहा गया कि शसूखी नदी के उद्गम क्षेत्र पसौली रैंज से लेकर उसके प्रवाह क्षेत्र में पड़ने वाले ग्राम खेड़ा, कुँवरपुर, रूपपुर राजनगर अरविन्द नगर, गोठा बरूवा बाग आदि से प्रवाहित होते हुए बैगुल डाम में समाहित हो जाती है। शोध छात्र सूरज कुमार ने सूखी नदी में बाढ़ का आंकलन, दुष्परिणाम व समाधानों पर पीपीटी के माध्यम पर विस्तृत प्रकाश डाला। उक्त शोध कार्य शोध निर्देशिक डा. कमला बोरा के भार्ग दर्शन में किय जा रहा है। व्याख्यान माला म महाविद्यालय के विद्यार्थियों, प्राध्यापक एवं शोध छात्रों द्वारा प्रतिभाग किय गया। व्याख्यान माला को पूर्व प्रभार स्व. भगवती जोशी को समर्पित क श्रद्धान्जलि अर्पित की गई। अन्त म असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल विभाग डा पूनम साह ने अपने सम्बोधन के साथ कार्यक्रम के समापन की घोषणा की

प्रथम व्याख्यान माला

रिपोर्ट

दिनांक :– 06.01.2022

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूद्रपुर के भूगोल विभाग एवं तराई शोध शिक्षा एवं विकास केन्द्र के तत्वाधान में 'जल घन संकट' विषय पर व्याख्यान माला का शुभारम्भ

दिनांक 06.01.2022 को सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूद्रपुर के भूगोल विभाग व तराई शोध शिक्षा व विकास केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में 'जल घन संकट' विषय पर व्याख्यान माला का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य/मुख्य समन्व्यक सी–टेड के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम का आयोजन व्याख्यान माला की संयोजक डॉ0 कमला बोरा द्वारा किया गया।

प्राचार्य महोदय को प्रो0 पूनम रौतेला द्वारा 'भक्त दर्शन पुरूस्कार' में नामित होने पर बुके, बैच लगाकर सम्मानित किया गया, प्राचार्य जी ने अपने सम्बोधन में तराई क्षेत्र के विकास के लिए कृषि, मृदा, जल संरक्षर, पर्यावरण, जैव–विविधता व मानव संसाधन आदि विषयों पर कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया गया, विभाग प्रभारी प्रो0 रौतेला क्षरा ग्लेशियरों पर ब्लेक कार्बन के प्रभार पर प्रकाश डाला। शोध छात्र सूरज द्वारा सूखी नदी में बाढ़ का ऑकलन, दुषपरिणाम व समाधानों पर पी0पी0टी0 के माध्यम पर विस्तृत प्रकाश डाला। उक्त व्याख्यान माला में महाविद्यालय के विद्यार्थियों प्राध्यापकों एवं शोध छात्रों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

तराई क्षेत्र में एक ओर बाढ़ की विभीषिका और दूसरी और जल संकट पर गहर चिन्तन व मन्थन के साथ जल संरक्षण पर विद्यार्थियों में जागरूकता का संचार किये जाने व जल संरक्षर पर अधिक शोध किये जाने का प्रस्ताव सामने आया।

श्रृंखला न0 02 एवं 03

‘जल धन संकट’

"तराई शोध व विकास केन्द्र" (C-TRED)
सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रूद्रपुर (ऊधम सिंह नगर)
"तराई शोध व विकास केन्द्र" (C-TRED) एवं भूगोल विभाग द्वारा
"जल–धन संकट" विषय पर एक सतत व्याख्यान माला

प्रथम व्याख्यान दिनांक :– 08.03.2022 समय 12.00 बजे
विषय शीर्षक :– .1 वैभव – कैलाश नदी बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का अध्ययन
वक्ता 2. सौरभ – ढेला नदी खनन का प्रभाव

~~वक्ता~~ :– ~~सूरज कुमार (शोधछात्र) भूपोल~~

नदी भूतल पर प्रवाहित एक जलधार है जिसका उद्गम स्त्रोत प्रायः कोई झील/हिमनद, (ग्लेशियर) झारना या वर्ष का पानी होता है अन्ततः किसी सागर या झील में गिरती है नदी दो प्रकार की होती है सदानीरा या बरसाती विश्व की सर्वाधिक प्राचीन सभ्यताओं का जन्म गंगा व सिन्धु नदीयों की घाटियों में ही हुआ एवं दुनिया के अधिकांश नगर नदियों के किनारे ही विकसित हुए है। भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार ही नदियॉ रही है किन्तु वर्तमान समय में दुनिया भर की अनेकों नदियों की तरह ही तराई की नदियॉ भी प्रदूषण का शिकार हैं तराई में आबादी के जमाव से पूर्व यहॉ की नदियों का जल इतना पवित्र था किन्तु वर्तमान समय में नगरीकरण व औद्योगिकरण ने नदियों के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है नदी में शहरों का प्रदूषित जल, कारखानों के रासायनिक अवशेष जल एवं सीवेज के जरिए गिरते पानी से नदियॉ संक्रमित हो चुकी है आज तराई की अधिकांश नदियॉ बिमार सी है, इसके अलावा जलवायु परिवर्तन भी एक महत्वपूर्ण कारक है जिसके फलस्वरूप अनियमित व अनियन्त्रित वर्षा के कारण बाढ़ का संकट तराई क्षेत्र झेलने को मजबूर है। आज नदियों की दुर्दशा कल सभ्यता के अस्तित्व के लिए खतरा व चेतवनी है। अतः समय रहते नदियों की पवित्रता व अस्तित्व को बचाने की मुहिम में सभी को साथ लेकर चलना होगा क्योंकि –

"नदियॉ है तो, यह मानव जीवन है
नदियॉ है तो, यह धारा है
नदियॉ हैं तो, हरियाली है
नदियॉ है, तो, जीवन में सुख–समृद्धि और खुशहाली है।"

प्रो0 के0के0 पाण्डे	डॉ0 कमला बोरा	प्रो0 पूनम रौतेला	डॉ0 पूनम साह
प्राचार्य	आयोजक सचिव/समन्वयक	सह समन्वयक	सह समन्वयक
अध्यक्ष/मुख्य समन्वयक (C-TRED)	भूगोल विभाग	भूगोल विभाग	भूगोल विभाग

09-03-2022

द्वितीय श्रृंखला का शुभारम्भ करते हुऐ डॉ0 कमला बोरा संयोजक

सी–ट्रेड के समन्वयक डॉ0 पी0एन0 तिवारी को सम्मानित करते हुए विभ

09-03-2022

सी–ट्रेड के समन्वयक डॉ0 पी0एन0 तिवारी सम्बोधित करते हुऐ

Department of Geography

विद्यार्थियों ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों से होने वाले दुष्परिणाम को जाना

जागरण संवाददाता, रुद्रपुर : सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में जलधन संकट कार्यशाला में विद्यार्थियों को कृषि, मृदा, जल संरक्षण सहित विभिन्न जानकारी उपलब्ध कराई गई। इसके साथ ही कैलाश नदी के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों एवं उसके दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला गया।

महाविद्यालय के भूगोल विभाग एवं तराई शोध शिक्षा एवं विकास केंद्र के तत्वाधान में बुधवार को जलधन संकट पर द्वितीय और तृतीय श्रृंखला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य कमल किशोर पांडे ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। प्राचार्य प्रोफेसर केके पांडे ने तराई क्षेत्र के विकास के लिए कृषि, मृदा एवं जल संरक्षण सहित नदी पर्यावरण एवं जैव विविधता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एमए प्रथम सेमेस्टर के छात्र वैभव गंगवार ने कैलाश नदी के बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र एवं उसके दुष्परिणामों पर व्याख्यान दिया। व्याख्यानमाला की तृतीय श्रृंखला में सौरव कुमार ने ढेला नदी के बाढ़ एवं खनन पर प्रभाव शीर्षक पर विस्तृत जानकारी दी। इस मौके पर डा. पूनम रौतेला डा. कमला डी भारद्वाज, डा. पूनम शाह, शशि बाला, डा. मनीषा, डा. निर्मला, डा. राजेश मौजूद थे।

रुद्रपुर सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में बुधवार को प्राचार्य डा. केके पांडे को बुके देकर सम्मानित करतीं शिक्षक ■ जागरण

द्वितीय एवं तृतीय व्याख्यान माला

रिर्पोट

दिनांक :– 09.03.2022

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूद्रपुर के भूगोल विभाग एवं तराई शोध शिक्षा एवं विकास केन्द्र के तत्वाधान में 'जल घन संकट' विषय पर द्वितीय तृतीय श्रृंखला का आयोजान किया गया।

दिनांक 09.03.2022 को सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूद्रपुर के भूगोल विभाग व तराई शोध शिक्षा व विकास केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में 'जल घन संकट' विषय पर व्याख्यान माला का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य/मुख्य समन्व्यक सी–ट्रेड के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम को आयोजन व्याख्यान माला की संयोजक डॉ0 कमला बोरा द्वारा किया गया।

प्राचार्य महोदय को प्रो0 पूनम रौतेला द्वारा पुष्प गुच्छ एवं बैच लगाकर स्वागत किया गया, प्राचार्य जी ने अपने सम्बोधन में तराई क्षेत्र के विकास के लिए कृषि, मृदा, जल संरक्षण, नदी पर्यावरण, जैव–विविधताओं विषयों पर कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। सी0–ट्रेड के कोडिनेटर एवं परीक्षा प्रभारी डॉ0 पी0एन0 तिवारी जी ने तराई शोध शिक्षा एवं विकास केन्द्र के सन्दर्भ में छात्र–छात्राओं को जानकारी दी उसके पश्चात् आज के कार्यक्रम के मुख्य वक्ता वैभव गंगवार एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर के छात्र द्वारा कैलाश नदी के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों एवं उसके दुश्परिणामों पर व्याख्यान दिया गया व्याख्यान माला की तृतीय श्रृंखला सौरभ कु0 द्वारा ढेला नदी के बाढ़ एवं खनन पर प्रभाव शीर्षक पर विस्तृत जानकारी दी गयी।

तराई क्षेत्र में एक ओर बाढ़ की विभीषिका और दूसरी और जल संकट पर गहर चिन्तन व मन्थन के साथ जल संरक्षर पर विद्यार्थियों में जागरूकता का संचार किये जाने व जल संरक्षर पर अधिक शोध किये जाने का प्रस्ताव सामने आया।

श्रृंखला न0 04 एवं 05

‘जल धन संकट’

"तराई शोध, शिक्षा व विकास केन्द्र" (C-TRED)
सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रूद्रपुर (ऊधम सिंह नगर)
"तराई शोध व विकास केन्द्र" (C-TRED) एवं भूगोल विभाग द्वारा
"जल–धन संकट" विषय पर एक सतत व्याख्यान माला

चतुर्थ व्याख्यान दिनांक :– 06.04.2022 समय 12.00 बजे

वक्ता :–

विषय शीर्षक :– .1 फारिहा – कल्याणी नदी पर्यावरणीय अध्ययन (एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर भूगोल)

2. संगीता – देवहा नदी का जल संकट (एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर भूगोल)

नदी भूतल पर प्रवाहित एक जलधार है जिसका उद्गम स्त्रोत प्रायः कोई झील/हिमनद, (ग्लेशियर) झारना या वर्ष का पानी होता है अन्ततः किसी सागर या झील में गिरती है नदी दो प्रकार की होती है सदानीरा या बरसाती विश्व की सर्वाधिक प्राचीन सभ्यताओं का जन्म गंगा व सिन्धु नदीयों की घाटियों में ही हुआ एवं दुनिया के अधिकांश नगर नदियों के किनारे ही विकसित हुए है। भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार ही नदियॉ रही है किन्तु वर्तमान समय में दुनिया भर की अनेकों नदियों की तरह ही तराई की नदियॉ भी प्रदूषण का शिकार हैं तराई में आबादी के जमाव से पूर्व यहॉ की नदियों का जल इतना पवित्र था किन्तु वर्तमान समय में नगरीकरण व औद्योगिकरण ने नदियों के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है नदी में शहरों का प्रदूषित जल, कारखानों के रासायनिक अवशेष जल एवं सीवेज के जरिए गिरते पानी से नदियॉ संक्रमित हो चुकी है आज तराई की अधिकांश नदियॉ बिमार सी है, इसके अलावा जलवायु परिवर्तन भी एक महत्वपूर्ण कारक है जिसके फलस्वरूप अनियमित व अनियन्त्रित वर्षा के कारण बाढ़ का संकट तराई क्षेत्र झेलने को मजबूर है। आज नदियों की दुर्दशा कल सभ्यता के अस्तित्व के लिए खतरा व चेतवनी है। अतः समय रहते नदियों की पवित्रता व अस्तित्व को बचाने की मुहिम में सभी को साथ लेकर चलना होगा क्योंकि –

"नदियॉ है तो, यह मानव जीवन है
नदियॉ है तो, यह धारा है
नदियॉ हैं तो, हरियाली है
नदियॉ है, तो, जीवन में सुख–समृद्धि और खुशहाली है।"

प्रो0 के0के0 पाण्डे	डॉ0 कमला बोरा	प्रो0 पूनम रौतेला	डॉ0 पूनम साह
प्राचार्य	आयोजक सचिव/समन्वयक	सह समन्वयक	सह समन्वयक
अध्यक्ष/मुख्य समन्वयक (C-TRED)	भूगोल विभाग	भूगोल विभाग	भूगोल विभाग

चतुर्थ व पंचम श्रंखला की रूप रेखा प्रस्तुत करते हुऐं कार्यक्रम की संयोजिका डॉ कमला बोरा

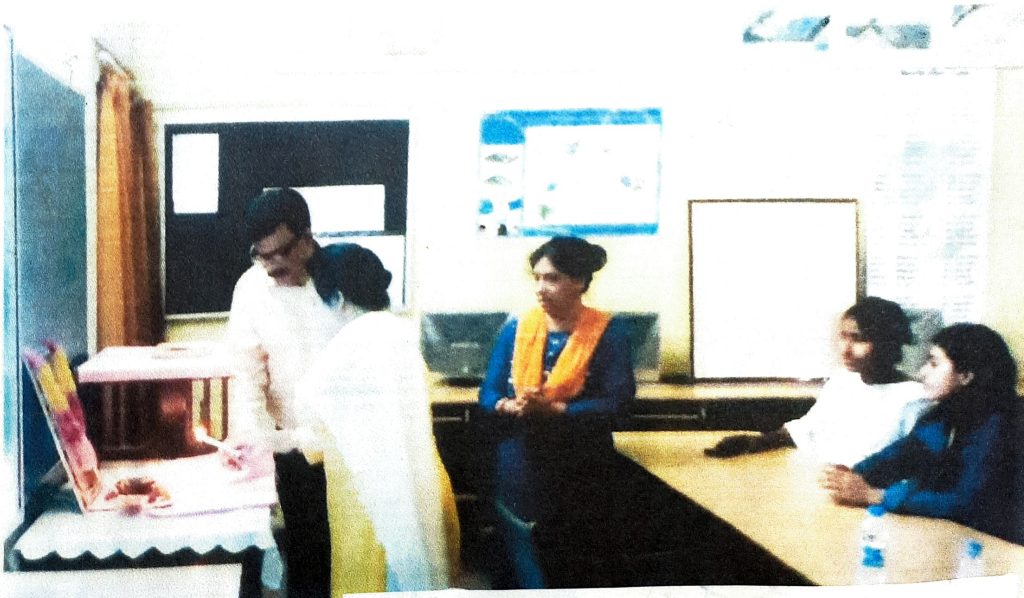

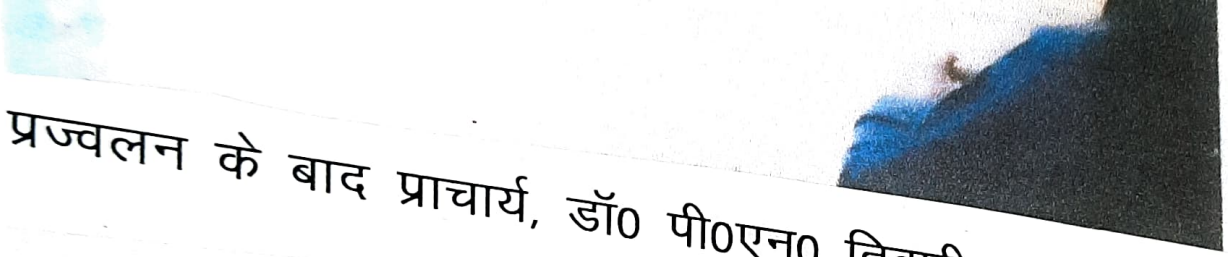

दीप प्रज्वलन के बाद प्राचार्य, डॉ0 पी0एन0 तिवारी व प्रो0 पूनम रौतेला

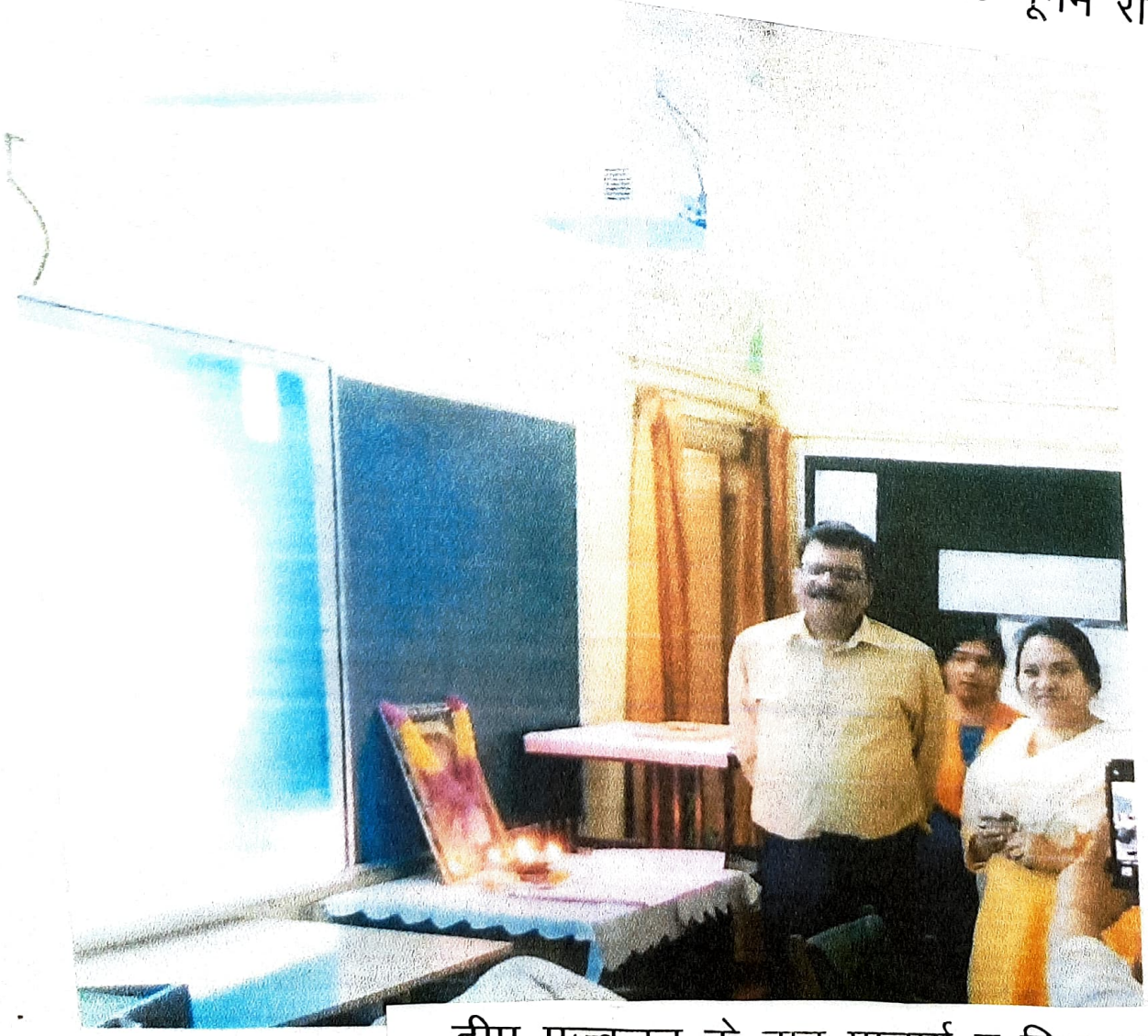

दीप प्रज्वलन के बाद प्राचार्य व विभाग प्रभारी

चतुर्थ श्रंखला को सम्बोधित करते हुऐ प्राचार्य प्रो0 कमल किशोर पाण्डे

चतुर्थ श्रंखला की मुख्य वक्ता कु0 फाहिरा द्वारा कल्याणी नदी की दुर्दशा पर व्याख्यान

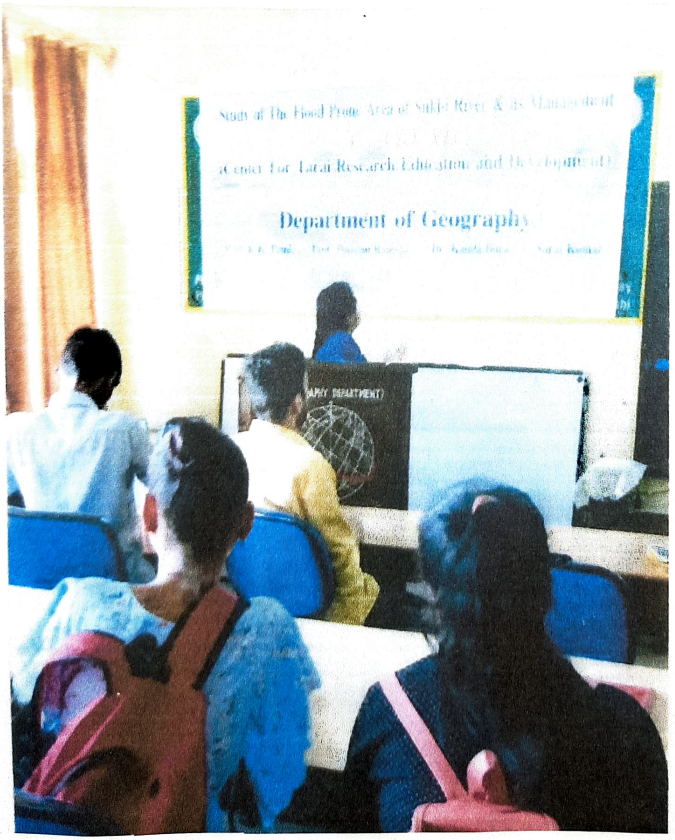

पंचम श्रंखला की वक्ता कु0 पूजा द्वारा देहवा नदी के खनन व प्रदूषण पर व्याख्यान

एसबीएस में जल धन संकट पर व्याख्यान

जासं, रुद्रपुर : सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के भूगोल विभाग एवं तराई शोध शिक्षा एवं विकास केंद्र की ओर से जल धन संकट पर आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में शोध छात्राओं ने अपने विचार रखे।

गुरुवार को महाविद्यालय में जल धन संकट पर व्याख्यान माला के चौथे एवं पांचवें श्रृंखला का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ प्राचार्य प्रो. केके पांडेय ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस दौरान प्राचार्य प्रो. पांडेय ने तराई के लिए कृषि मृदा जल संरक्षण, नदी, पर्यावरण एवं जैवि विविधता पर कार्य करने पर बल दिया। साथ ही तराई को तराई फरटाइल विद ब्रेन कहकर संबोधित किया। इसके बाद कार्यक्रम की मुख्य वक्ता एमए तृतीय सेमेस्टर की छात्रा फारेहा ने कल्याणी नदी के परिवर्तित रूप गंदा नाला पर व्याख्यान दिया। पंचम श्रृंखला में संगीता ने देवहा नदी पर व्याख्यान दिया। इस मौके पर डा. पूनम रौतेला, डा. कमला बोरा, शोध छात्र सूरज कुमार, आकाश, रीता, प्रीति मौजूद थे।

गुरुवार को रुद्रपुर में सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में व्याखानमाला के दौरान जल धन संकट पर अपने विचार रखती वक्ता • जागरण

चतुर्थ एवं पंचम व्याख्यान माला?

रिपोर्ट

दिनांक :– 07.04.2022

दिनांक 07.04.2022 को सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूद्रपुर के भूगोल विभाग एवं तराई शोध शिक्षा एवं विकास केन्द्र के तत्वाधान में 'जल घन संकट' विषय पर चतुर्थ एवं पंचम श्रृंखला का आयोजान किया गया।

व्याख्यान माला का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य/मुख्य समन्व्यक सी–ट्रेड के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम आयोजन व्याख्यान माला की संयोजक डॉ0 कमला बोरा द्वारा किया गया प्राचार्य महोदय का प्रो0 पूनम रौतेला पुष्प गुच्छ एवं बैच लगाकर स्वागत किया गया। प्राचार्य जी ने अपने सम्बोधन में तराई क्षेत्र के लिए कृषि मृदा जल संरक्षण नदी पर्यावरण एवं जैव विविधता विषयों पर कार्य करने की आवश्यकता पर बल देने के साथ साथ ही उन्होने तराई को फरटाइल विद ब्रेन कहकर सम्बोधित किया

डसके पश्चात आज के कार्यक्रम की मुख्य वक्ता फारेहा एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर की छात्रा द्वारा कल्याणी नदी के परिवर्तित रूप गन्दा नाला पर व्याख्यान दिया व्याख्यान माला की पंचम श्रृखला में कु0 संगीता द्वारा देवहा नदी पर विस्तृत व्याख्यान दिया गया।

उक्त व्याख्यान में सी–ट्रेड के कोर्डिनेटर एवं परीक्षा प्रभारी डॉ0 पी0एन0 तिवारी उपस्थित रहे। व्याख्यान में महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 पूनम रौतेला, डॉ0 कमला बोरा एवं छात्र सूरज कुमार एवं एम0ए0 प्रथम सेमेस्टर और तृतीय सेमेस्टर के छात्र एवं छात्रा आकाश, रीता, प्रीती एवं अभिषेक आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अंत में कार्यशाला का समापन डॉ0 कमला बोरा द्वारा किया गया।